Study on Impact of Demonetisation on Psychology, Economic Independence and Nutritional Level of Housewives

Dr Sneha Lata

Guest Faculty (PhD. & UGC NET)

Home Science Dept, Magadh Mahila College, Patna University, Patna

गृहणियों के मनोवैज्ञानिक, आर्थिक स्वाबलंबन एवं पोषणात्मक स्तर पर विमुद्रीकरण का प्रभाव का अध्ययनः–

डॉ0 स्नेहलता,
गेस्ट फैकल्टी (पी0एच0डी0 एवं यू जी0 सी0 नेट)
गृह विज्ञान विभाग, मगध महिला कॉलेज, पटना विश्व विधालय, पटना।

सारांशः– प्रस्तुत अध्ययन विमुद्रीकरण के बाद गृहिणियों पर पड़ने वाले प्रभाव के आकलन हेतु किया गया है। गृहिणियॉ जो घर की वित्तीय प्रभारी होती है, परिवार के लिए भोजन की व्यवस्था, अन्न भंडारण के साथ–साथ बच्चों एवं बुजुर्गो की देख–रेख एवं रोजमर्रा की जरूरतो की खरीदारी आदि करती है। विमुद्रीकरण के बाद गृहिणियों पर मनोवैज्ञनिक आर्थिक स्वाबलंबन एवं पोषणात्मक स्तर पर क्या प्रभाव पड़ा, उसी का विशलेषण किया गया।

संकेत शब्दः– विमुद्रीकरण, स्वाबलंबन, पोषणात्मक स्तर, जाली नोट, गुप्तधन, कालाधन

भूमिकाः– भारत में 8 नवम्बर 2016 की आधी रात से देश में 500 और 1000 रूपये के नोटों को प्रचलन से बाहर करने की घोषणा किया गया। जिसे मीडिया ने नोटबंदी की संज्ञा दिया, यानि नोटों का विमुद्रीकरण किया गया। जब किसी देश में कालेधन की एक सामांनतर अर्थव्यवस्था खड़ी हो जाती है और अर्थव्यवस्था में जाली मुद्रा आवश्यकता से अधिक बढ़ जाती है तब नोटबंदी यानि विमुद्रीकरण की जाती है। बड़े मुद्रा का प्रवाह बंद कर नई मुद्रा जारी की जाती है। विमुद्रीकरण का मुख्य उद्देश्य कालेधन, भ्रष्टाचार और जाली नोटों पर अंकुश लगाना था। देश भर में पहली प्रतिक्रिया हैरत और अविश्वास की थी। भारत में पहले भी दो बार विमुद्रीकरण किया गया था, 1948 और 1978 में लेकिन उन दोनों मौको पर भारतीय अर्थव्यवस्था इतनी जीवंत नही थी। जिन नोटो का विमुद्रीकरण किया गया वे बड़ी कीमत वाले थे और बहुत कम लोगों के पास ही इतने बड़े नोट हुआ करते थे। इसलिए आम लोगों को ज्यादा परेशानी नहीं हुई लेकिन 2016 में विमुद्रीकरण का व्यापक प्रभाव पड़ा। इस समय 500 और 1000 रूपये का नोट सबसे ज्यादा प्रचलन में थे इसलिए उनके विमुद्रीकरण से लोगों के पास ब्रेड–बटर, फल, दूध, अंडे, सब्जियों जैसे खाने पीने की रोजमर्रा की समान खरीदने के लिए नकदी नहीं बची। गृहिणियॉ जो घर के खर्चो में से कटौती कर कुछ पैसे आपात काल के लिए पति से छुपा कर रखती थी, वे भी वे अपने पतियों को नए रूपये में बदलने हेतु दे दी। इसका प्रभाव उनके मनोवैज्ञनिक स्तर

पर पड़ा क्योकि वे अपने ही परिवार में चोर समझी गई। वे अपने आपको आर्थिक रूप से असहाय महसूस करने लगी क्योंकि उनके पास अब कोई धन नहीं था। वे छोटी मोटी जरूरतो के लिए परिवार पर अश्रित हो गई। विमुद्रीकरण के कारण आम लोगों के साथ गृहिणी भी लंबी–लंबी लाइनों में बैंको के आगे खड़ी नजर आई वे अपने, बच्चों के लिए आहार की व्यवस्था नहीं कर पाती जिससे उनको संतुलित पोषण तक नहीं मिल पाता था। उनके पास इतने पैसे नहीं थे, कि वे परिवार के लिए प्रतिदिन का संतुलित आहार की व्यवस्था कर सकें। इसका प्रभाव उनके पोषणात्मक स्तर पर विपरीत पड़ा और अनेक रोगों से ग्रस्त होने लगी।

एकाएक सरकार के विमुद्रीकरण के फैसले ने भारत की करोड़ों गृहिणियों को निहत्था कर दिया, इस फैसेले से महिलाएँ अपने ही घर में शक के निगाहो से देखी जाने लगी। सरकार का फैसला जैसे ही घरो में पहुँचा वैसे ही बहू, पत्नी, दादी, नानी अपना स्त्री धन लेकर अपने घर के मुँखिया को बदलने हेतु देने लगी। किसी के पास दस हजार निकला तो किसी के पास लाख दो लाख। ये महिलाओ का अपना पैसा था। जो घरेलू खर्चो में कटौती कर, अपनी इच्छाओं में कटौती कर अपने रिशतेदारो द्वारा दिए जाने वाले उपहार में मिले पैसे होते है, जिसे वे जरूरत पड़ने पर इस्तेमाल करती थी आर्थिक स्वाबलंबन महसूस करती थी, अब वह पैसा परिवार का हो चुका था। कई सालों से बचाए पैसे एक झटके में सरकार और परिवार की निगाह में आ गई। उनके पैसे पर पति–बेटो का नियत्रंण हो चुका था। अपने गुप्त धन से वे अपने बच्चों को मिठाई, फल, चॉकलेट आदि खरीदती थी। आवश्यकता पड़ने पर परिवार की आर्थिक मदद करती थी, सभी दरवाजे एका–एक बंद हो गए।

स्त्रीधन/गुप्त धन गृहिणियों के आत्म सम्मान को बनाए रखने में मदद करती थी। पूजा–त्योहार, शादी–ब्याह के अवसर पर छोटे–छोटे खर्चे इन्हीं पैसों से होती थी, अब इसी काम के लिए पैसे पुरूषों से मांगने पर झिझक होने लगी जो उनके मनोबल पर प्रतिकुल प्रभाव डालने लगा। गृहिणियों के क्रय शक्ति प्रभावित हुई इससे परिवार के पोषण प्रभावित हुआ, साल ही स्वाबलंबन का भूख भी समाप्त हो गया।

अध्ययन का उद्देश्यः–

1. इस शोध कार्य का उद्धेश्य गृहिणियों पर नोटबंदी का मनोवैज्ञानिक और आर्थिक प्रभाव का अध्ययन करना है। इस अध्ययन के द्वारा यह पता लगाना है कि विमुद्रीकरण होने के कारण उनके आर्थिक एवं मानसिक रूप से कितना प्रभाव पड़ा है?
2. क्या आर्थिक रूप से गृहिणियॉ आत्मनिर्भर न रहकर परिवार पर निर्भर हो गयी? इस प्रकार शैक्षिक स्तर का निर्धारित करके शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की गृहिणियों का तुलना करना है।
3. क्या नोटबंदी का प्रभाव परिवार और गृहिणी के पोषणात्मक स्तर पर भी पड़ा?

परिकल्पनाः– संगत अध्ययनों के आलोक में विमुद्रीकरण का गृहिणियों पर आर्थिक एवं मानसिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रभाव के संदर्भ में निम्न परिकल्पना बनायी गयी है जो इस प्रकार है।

1. गृहिणी मनोवैज्ञानिक तथा आर्थिक रूप से कमजोर हुई होगी।

2. गृहिणी के आर्थिक स्वाबलंबन पर बुरा प्रभाव पड़ा होगा।
3. शहरी क्षेत्र की गृहिणी की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र की गृहिणी ज्यादा प्रभावित हुई होगी।
4. गृहिणी तथा परिवार के लोगो पर पोषण संबंधी आवश्यकता भी प्रभावित हुआ होगा।
5. शिक्षित गृहिणी से ज्यादा अशिक्षित गृहिणी प्रभावित होगी।

साहित्य का पुनरावलोकन – यह अध्याय दो भागों में विभाजित हैः–

1. संदर्भ साहित्य का पुनरावलोकन
2. संदर्भ कार्यो का पुनरावलोकन

(1). संदर्भ साहित्य का पुनरावलोकन

नोटबंदी यानी विमुद्रीकरण देश की अर्थव्यवस्था से कालाधन, आतंकवाद को समाप्त करने के लिए 8 नवम्बर 2016 को दिया गया इसे 500–1000 के नोटो को बंद किया गया। जिससे पूरे देश में अफरा–तफरी का माहौल बन गया बहुत से काले धन बोरियों में डाल कर नदियों, तालाबों में बहाया जाने लगा बहुत से लोग जबरदस्ती दूसरों के खातों में पैसा डालने लगे। देश की अर्थव्यवस्था को बनाये रखने के लिए इससे पहले भी हमारे देश में इसी तरह के उपायों को भारत की स्वतंत्रता के बाद लागू किया गया था। जनवरी 1946 में 1000 और 10,000 रूपये के नोटों को वापस किए गए थे। 16 जनवरी 1978 को जनता पार्टी की गठबंधन सरकार ने फिर से 1000, 5000 और 10,000 रूपये के नोटो का विमुद्रीकरण किया था ताकि जालसाजी और कालेधन पर अंकुश लगाया जा सके।

28 अक्टूबर 2016 को भारत में 17.77 लाख करोड़ (यूएस 5260 बिलियन) मुद्रा सर्कुलेशन में थी। मूल्य के आधार पर 31 मार्च 2016 को आई रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की रिपोर्ट अनुसार सर्कुलेशन में नोटो की कुल कीमत 16.42 लाख करोड़ (यूएस +240 बिलियन) है। जिसमें से 86ः 14.19 लाख करोड़ (यूएस +210 बिलियन) 500 और 1000 के नोट हैं। वॉल्यूम के आधार पर रिपोर्ट अनुसार 9,026.6 करोड़ नोटो में से 24ः (अर्थात 2,203 करोड़) बैंक नोट सर्कुलेशन में हैं। प्रधानमंत्री मोदी की अधिकारिक घोषणा के बाद रिजर्व बैंक के गवर्नन उर्जित पटेल और आर्थिक मामलों के सचिव शक्ति कांत दास द्वारा एक संवाददाता सम्मेलन में बताया कि सभी मूल्यवर्ग के नोटो की आपूर्ति में 2011 और 2016 और बीच में 40ः की वृद्धि हुई थी रू 500 और 1000 पैसों में इस अवधि में क्रमशः 76ः और 109ः की वृद्धि हुई। इस जाली नकदी को भारत के खिलाफ आतंकवादी गतिविधियों में इस्तेमाल किया गया था। इसके परिणाम स्वरूप नोटो को खत्म करने का निर्णय लिया गया था। मीनाक्षी लेखी ने 2014 में कहा था कि '' आम औरत आदमी जो लोग अनपढ़ है और बैंकिंग सुविधाओं तक जिनकी पहुँच नहीं है ऐसे लोग इस तरह के उपायों से सबसे ज्यादा प्रभावित होंगे। परन्तु नोटबंदी के कुछ फायदे हैं और कुछ नुकसान। फायदे निम्नलिखित हैंः–

1. भारत देश की अर्थव्यवस्था पर प्रभावः– देश के आर्थिक विकास की रफतार और तेजी से बढ़ने की उम्मीद है। 500–1000 के नोटो पर पाबंदी के बाद करेंसी अर्थव्यवस्था की कमियों (काला धन, नकली नोट और छद्य, बैंकिंग आदि का भरेंगे,

जिससे देश की अर्थव्यवस्था में नई जान आयगी) उसे और मजबूती मिलेगी 2015 में वर्ल्ड बैंक के ऑकड़ों के मुताबिक दक्षिण एशिया में भारत की विकास दर सबसे ज्यादा रही है। 2015 में भारत 7.57 फीसदी सकल घरेलू उत्पाद रहा था। राजनीति और चुनाव प्रक्रिया पारदर्शी बनेंगीः– समानांतर कालेधन जो अर्थव्यवस्थ एवं राजनीति को प्रभावित करती है उस पर अंकुश लगे।

2. रियल एस्टेट उद्योग सस्ते होंगेः– नोटबंदी के बाद माना जा रहा है कि बैंक की दरें घटेंगी जबकि फलैट की कीमतें नीचे आएंगी यानी अपने घर का सपना देखने वाले लोगों के वाकई अच्छे दिन आ सकते हैं।
3. कृत्रिम अमीरी पर नकेल कसेगीः– काला धन रखने वालों के अच्छे दिन खत्म होने वाले है। 500–1000 के नोटों पर पाबंदी लगने से देश में कैश के रूप में जमा काला धन कागज के टुकड़ों के समान हो गया है। यही वजह है कि कहीं नदी में पैसे मिल रहे हैं तो कहीं जलाए जा रहे है।
4. नकली नोट बंद होंगेः– नोट बदलने का सबसे बड़ा मकसद नकली नोटों की समस्या पर लगाम लगाना बताया जा रहा है और विरोधी पार्टियों के नेता भी कम से कम इतना मान रहे हैं कि नकली नोट की समस्या से इस कदम से निपटा जा सकता है क्योंकि नए नोटो की सीरीज में सिक्योरिटी फीचर ज्यादा हैं जिनकी कॉपी करना पाक या किसी दूसरे देश के लिए बेहद मुश्किल होगा।

परन्तु नोट बंदी से बहुत से लोगों को बहुत बुरा प्रभाव भी पड़ा है नोटबंदी ने लोगों को अपने रूपये को पाने के लिए दिन भर भूखे, प्यासे लाइनों में खड़ा होने पर मजबूर किया इससे महिलाएँ, किसान, बीमार तथा निम्न वर्ग के लोगों का पोषण तक प्रभावित हुआ है, अपने ही पैसो को पाने के लिए लोग दिन–दिन भर बैंको के चक्कर काटने पर मजबूर थे सबसे ज्यादा प्रभावित हमारे देश के कमजोर गृहिणियॉ हुई है। जिन्होंने अपने घर के लोगों से छुपाकर अपने अरमानों की तीलान्जली देकर उन पैसों को इकट्ठा किया था जो जिन्दगी में उस समय उसका साथ देते जब उसके परिवार में कोई बड़ी मुसीबत या परेशानी आ जाती तब वो उन पैसों को निकालती थी लेकिन नोटबंदी के वजह से उनका सारा पैसा अब पति के द्वारा बैंको में चला गया इससे वो बुरी तरह प्रभावित हुई है। नोटबंदी का असर गृहिणियों की रसोई पर भी पड़ा है जो उसके पोषण को प्रभावित किया है, रोज के छोटे–छोटे खर्च के लिए तक पैसे नहीं थी जिससे वो सभी घरेलू सामान खरीद सके उस स्थिति में जैसे–तैसे काम चला रही है।

अध्ययन प्रविधियॉ

अध्ययन का क्षेत्र– प्रस्तुत शोध के लिए ये सभी (स्ब्ज अगम कुऑ घाट मैनपुरा बगीचा, गंगा टावर दीघा) पटना का चयन किया गया।

निदर्शन आकर एवं निदर्शन तकनीक– अध्ययन के लिए 50 गृहिणियों का चयन किया गया। उनका चुनाव आकस्मिक प्रतिचयन विधि (प्दबपकमदजंस ैउचसपदह ज्मबीदपुनम) द्वारा किया गया।

ऑकड़ों का संग्रहण– ऑकड़ों से संग्रह के लिए साक्षात्कार प्रविधि का प्रयोग किया गया।

ऑकड़ों का विश्लेषण– ऑकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत में किया गया।

परिणाम एवं परिचर्चा

प्रस्तुत अध्यान नोटबंदी का गृहिणियों पर प्रभाव के आकलन हेतु किया गया था। इस अध्ययन के प्राप्त ऑकड़े एवं उनके विश्लेषण का वर्णन हैः–

गृहिणियों के आर्थिक स्थिति एवं नोटबंदी से संबंध :–

गृहिणियों के पोषणात्मक स्तिथी एवं नोटबंदी से संबंध :–

शोधकार्य के क्रम में बनाई गयी परिकल्पनानुसार गृहिणियों पर नोटबंदी के प्रभाव की जानकारी के उद्धेश्य से किये गये प्रदत्त–संग्रह के विश्लेषण के आधार पर जो परिणाम प्राप्त किये गये उनका विवरण निम्नलिखित सारणी संख्या 01 में दर्शाया गया है :–

सारणी संख्या–01

क्रं0सं0	प्रतिदर्शो की संख्या	नोटबंदी से प्रभावित महिलाओं का स्तर	उत्तरदाताओं का : में
1	50	ज्यादा प्रभावित–30	60:
		मध्यम प्रभावित–15	30:
		निम्न प्रभावित–5	10:

उपर्युक्त सारणी सं0 01 जिसमें प्राप्त परिणामों को दर्शाया गया है, के अवलोकन से स्पष्ट है कि 50 में से 30 महिलाएँ ज्यादा प्रभावित हुई उनमें से 15 महिलाएँ के पास बैंक अकाउन्ट होने के कारण कम प्रभावित हुई तथा 5 महिला बहुत कम प्रभावित हुई।

सारणी संख्या–02

गृहिणियों में नोटबंदी से प्रभावित होने के कारण :

क्रं0सं0	गृहिणियों को प्रभावित होने के कारण	उत्तरेदाताओं का : उत्तर में
1	ज्ञान का अभाव	90

2	शिक्षा का अभाव	85
3	डिजिटल इंडिया के बारे में जानकारी का अभाव	87
4	अपने गुप्त धन को परिवार से छुपा के रखने के कारण	75

उपर्युक्त सारणी संख्या–02 में प्राप्त ऑकड़ों से हमें यह ज्ञात हुआ कि नोटबंदी से गृहिणियॉ किन–किन कारणों से प्रभावित हुई प्राप्त ऑकड़ों में हमें यह ज्ञात हुआ कि ज्ञान के अभाव के कारण 90: महिला, शिक्षा के अभाव के कारण 85: डिजिटल इंडिया के बारे में जानकारी के अभाव में 87: तथा अपने गुप्त धन को परिवार से छुपा के रखने के कारण 75: महिलाएँ प्रभावित हुई इन सभी कारणों से महिलाएँ प्रभावित हुई है।

सारणी संख्या–03

नोटबंदी से महिलाओं की मनोवैज्ञानिक आजादी चले जाने के कारण (छ+50)

क्रं0सं0	नोटबंदी से गृहिणियों की मनोवैज्ञनिक आजादी चले जाने के कारण	उत्तरेदाताओं का उत्तर : में
1	बैंक अकाउन्ट नहीं होने के कारण	75:
2	पति को अपना पैसा देने के कारण	80:
3	पूरी तरह अपने पति पर निर्भर हो जाने के कारण	80:
4	सरा पैसा बैंक अकाउन्ट में चले जाने से खाली एवं मनोवैज्ञानिक रूप से कमजोर होने के कारण	90:

उपर्युक्त तालिका 03 से हमे यह पता लगा कि महिलाओं की नोटबंदी से महिलाओं का आर्थिक, मनोवैज्ञानिक आजादी चली गई क्योंकि 75: महिलाओं के पास बैंक अकाउन्ट नहीं था। इसके लिए वो अपने पैसा को पति के अकाउन्ट में डलवा दी, जिससे वह पूरी तरह अपने पति पर निर्भर हो गई। सारा पैसा बैंक अकाउन्ट में चले जाने से उनके पास पैसा नहीं रहने से वो खाली और मायूस हो गई।

सारणी संख्या–04

महिलाओं का शैक्षणिक स्तर (छत्र50)

क्रं0सं0	महिलाओं में शिक्षा का स्तर	उत्तरेदाताओं के उत्तर के आधार पर : में
1	मैट्रिक त्र 10	20:

2	ग्रेजुएट त्र 0	0:
3	पोस्ट ग्रेजुएट त्र 0	0:
4	सिर्फ अक्षर ज्ञान त्र 40	80:

नोटबंदी से गृहिणियॉ अगर ज्यादा प्रभावित हुई है इसका सबसे महत्वपूर्ण कारण है महिलाओं में शिक्षा का अभाव जो उपर्युक्त सारणी संख्या 04 में दर्शाया गया है, उनसे प्राप्त ऑकड़ों के आधार पर पाया गया कि कम पढ़े लिखे होने के कारण गृहिणियॉ ज्यादा प्रभावित हुई है।

सारणी संख्या–05

नोटबंदी से गृहिणियों के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव इस सारणी संख्या–05 में दर्शाया गया है– (छत्र50)

क्रं0सं0	गृहिणियों के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव	उत्तरेदाताओं के प्राप्त उत्तर के आधार पर प्राप्त ऑकड़े : में
1	मायुस हो गई	60:
2	आर्थिक रूप से कमजोर हो गई	50:
3	पैसा हाथ में न रहने से मानसिक रूप से परेशान हो गई	30:
4	अपनी जरूरतों के लिए अपने पति पर निर्भर हो गई	70:

उपर्युक्त सारणी– 05 से प्राप्त ऑकड़ों के आधार पर यह ज्ञात हुआ की नोटबंदी से महिलाओं के जीवन पर कितना प्रभाव पड़ा उनके पास पैसा नहीं होने के कारण 60: महिलाऍ अपने जीवन में मायूस हो गई। अपने जरूरतों के लिए अपने पति या परिवार वालों पर निर्भर हो गई। आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण मानसिक रूप से परेशान रहने लगी इन ऑकड़ों से यह ज्ञात होता है कि बहुत सी महिलाओं के जीवन पर नोटबंदी का असर पड़ा है। उनका और परिवार का पोषणात्मक स्तर नीचे गया।

अध्याय प्ट

निष्कर्ष एवं अनुशंसा

प्रस्तुत शोध परिणाम के आधार पर निष्कर्ष रूपर से यह स्पष्ट है कि विमुद्रीकरण का गृहिणियों के मनोवैज्ञानिक, आर्थिक स्वाबलंबन एवं पोषणात्मक स्तर पर ऋणात्मक प्रभाव पड़ा।

- ग्रामीण एवं शहरी गृहिणियों के मनोवैज्ञानिक एवं आर्थिक रूप से पड़ने वाला प्रभाव में अंतर आया।
- ग्रामीण गृहिणी ज्यादा प्रभावित हुई, क्योंकि वह ज्यादातर अशिक्षित थी शहरी महिलाओं के अपेक्षा।

- ❖ नोटबंदी के बाद डिजिटल इंडिया पर जोर दिया जा रहा है नेट बैंकिंग, एटीएम, पेटीएम आदि पर जोर दिया जा रहा है। ज्यादातर महिलाएँ को इसकी जानकारी नहीं थी। जिनके पास खाता है भी तो उनको संचालित नहीं करने आता है।
- ❖ ग्रामीण गृहिणी पूरी तरह अपने परिवार वाले पर आश्रित होती है, उनका आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक आजादी चली गयी आर्थिक रूप से वे असहाय हो गयी क्योंकि जो भी पैसा उनके पास थोड़ा बहुत बचाया हुआ पैसा था वे भी नोटबंदी के बाद पति को या घर के मुखिया को दे दी। अब उनके पास कोई पैसा आने का स्त्रोत नहीं है क्योंकि अब ज्यादातर लोग एटीएम, पेटीएम, भीम एप से पैसा का लेन–देन का इस्तेमाल करने लगे है।

अनुशंसा (सुझाव)

सुझाव के रूप में यह कहा जा सकता है कि महिलाओं को अधिक से अधिक शिक्षित किया जाना चाहिए, उन्हें भी आर्थिक रूप से निर्भर बनने का मौका देना चाहिए। ताकि वे मनोवैज्ञानिक रूप से मजबूत बने उनका भी बैंक में खाता होना चाहिए और उन्हें संचालित करने का मौका देना चाहिए। बदलते परिवेश में उन्हें आर्थिक गतिविधियों में भी सहयोग दें। आज के 21 वीं शताब्दी में महिला हर एक क्षेत्र में पुरूषों के साथ कदम–से–कदम मिला कर चल रही है, वहीं निम्न वर्ग की लड़कियों को शिक्षा के लिए प्रेरित करना उनके माता–पिता को प्रोत्साहित करना की अपने लड़कियों को शिक्षित करें, ताकि उनका भविष्य उज्जवल हो और वह आर्थिक रूप से मजबूत बने ताकि वो किसी तरह से अपने परिवार पर बोझ न बने तथा भविष्य में कोई भी नोटबंदी महिलाओं को इस प्रकार कमजोर न कर सकें। वो भी उच्च वर्ग की महिलाओं की तरह हर परिस्थिति का सामना कर सके तथा अपने धन, अपने स्वाबलंबन की रक्षा कर सके।

संदर्भ–सूची

समाचार पत्र

हिन्दुस्तान

दैनिक जागरण

दैनिक भास्कर

हिन्दुस्तान टाइम्स

एन डी0 टी0वी0

योजना

प्रतियोगिता दर्पण

Website:

www.shiveshpratap.com

www.news.raftaar.in

www.https:-hi.m.wikipedia.org

Social media